12

fo".kqlglzukeLrks=&I

विष्णुसहस्रनामस्तोत्र का उल्लेख महाभारत महाकाव्य में मिलता है। इसका शब्दिक अर्थ है – विष्णु के एक हजार नाम। यह महाभारत के अनुशासनिक पर्व (राजाओं के लिए निमय–कानून बताये गये अध्याय) में लिखा गया है।

अर्जुन के द्वारा भीष्म को जब बाणों से घायल कर दिया गया था तो भीष्म द्वारा अपनी वर शक्ति से मृत्यु का समय उत्तरायण चुना हुआ था इसलिए वो उस शुभ मुहुर्त की प्रतीक्षा कर रहे थे। इस समय

महाभारत का युद्ध समाप्ति की तरफ था तथा सभी मुख्य योद्धा, पांडवों और अभिमन्यु के अजन्मे बच्चे को छोडकर, मृत्यु को प्राप्त हो चुके थे। इस समय पाण्डवों में ज्येष्ठ युधिष्ठिर हस्तिनापुर के राजा बने और उस समय भीष्म के अलावा वो किसके पास सलाह के लिए जाते। अनुशासनिक पर्व में युधिष्ठर और भीष्म के बीच का संवाद (प्रश्नोत्तर शैली में) है। इस प्रश्न के जवाब में की सबसे श्रेष्ठ स्तोत्र कौनसा है, भीष्म ने विष्णुसहस्रनामस्तोत्र का नाम लिया और इस स्तोत्र युधिष्ठिर को समझाया। हालकि यह एक हजार पहलुओं पर वर्णन करता है जिसमें भगवान की प्रशंसा की गई है। यह समझने के लिए उतना आसान नहीं हैं शंकर भागवत पाद जैसे अनेक महान आचार्यो ने इसका सरलार्थ करने की आवश्यकता महसूस कि ताकि भक्तजन न केवल इसका उच्चारण कर सकें बल्कि इसका अर्थज्ञान करते हुए भगवान से भी अपने आप को जोड़ सकें। परंतु यह कार्य भी फिर से संस्कृत भाषा में किया गया। परंतु आधुनिक समय में इसका सरलार्थ न केवल अंग्रेजी में बल्कि भारत की सभी समृद्ध भाषाओं में मिलता है।

इस स्तोत्र के अंत में देवी पार्वती ने ब्रह्मण के देवता शिवजी से इस स्तोत्र को सीखने के लिए गाने के रूप में एक आसान तरीका पूंछती है। उन्होंने उत्तर दिया कि राम के नाम का बार बार उच्चारण करना सहस्रनाम के गाने के जैसा ही महत्त्व रखता है।

fo".kq lglzukeLrks=&I

mís';

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- श्लोकों का शुद्ध रूप में उच्चारण कर पाने में; और
- श्लोकों का अभ्यास कर पाने में ।

12.1 fo".kq lglzukeLrks= & I

AA Jhfo".kqlglzukeLrks=e~ AA

नारायणं नमस्कृत्य नरं चौव नरोत्तमम् ।

देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ।।

ऊँ अथ सकलसौभाग्यदायक श्रीविष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् ।

'kqDykEcj/kja fo".kqa 'kf'ko.kZa prqHkqZte~ A

çlUuonua /;k;sr~ lofo?uksi'kkUr;s AA ƒAA

आप चन्द्रमा जैसे धवल रंग में रंगे हुए हैं और उसी धवल रंग में आपकी आभा शोभायमान (चमक) रही है। आप अन्तर्यामी हैं एवं चार भुजाधारी हैं। मैं आपके सदा मुस्कुराते चेहरे पर ध्यान लगा रहा हूँ और प्रार्थना कर रहा हूँ की मेरे पथ की सारी बधाएं दूर हो जाएँ।

;L; f}jnoäk|k% ikfj"k|k% ij''kre~ A

fo?ua fu?ufUr lrra fo"oDlsua rekJ;s AA „AA

बहुत सारे सेवकों वाले, हाथी समान चेहरे वाले, विष्वक्सेना हमारे सभी

दुःख दूर करेंगे अगर हम उन पर पूरी तरह उन पर अपने को समर्पित कर पायेंगे।

0;kla ofl"Bulrkja 'kä% ikS=edYe"ke A
ijk'kjkRete oUns 'kqdrkra rikfuf/ke AA …AA

मैं व्यास को नमन करता हूँ जो तपस्या की मूर्ति हैं और वसिष्ठ ऋषि के पौत्र हैं। शक्ति के पोते हैं। पराशर के पुत्र हैं और शुक के पिता है।

0;klk; fo".kq:ik; 0;kl :ik; fo".kos A
ueks oS cãfu/k;s okfl"Bk; ueks ue% AA †AA

व्यास ही विष्णु रूप हैं और विष्णु ही व्यास रूप हैं और मैं उन्हें प्रणाम करता हूँ। वो जो वसिष्ठ के परिवार में जन्मा है, उन्हें मेरा पुनः पुनः प्रणाम है।

vfodkjk; 'kq)k; fuR;k; ijekReus A
lnSd:i:ik; fo".kos loZft".kos AA ‡AA

वो जो पवित्र हैं, जो परम हैं, जो सदा सत्य रूप हैं, जो संसार की सब नश्वर वस्तुओं से परे हैं, उस विष्णु को मेरा प्रणाम है।

;L; Lej.kek=s.k tUelalkjcU/kukr~ A
foeqP;rs ueLrLeS fo".kos çHkfo".kos AA ^AA

मैं उस परम सता विष्णु को प्रणाम करता हूँ जिसके बारे में एक बार

सोचने मात्र से ही जन्म और मृत्यु बंधन कट जाते हैं। उस सर्वशक्तिमान विष्णु को पुनः पुनः प्रणाम है।

Å uek fo".ko çHkfo".ko A

Jho'kEik;u mokp ---

JRok /keku'k"k.k ikoukfu p lo'k% A

;f/kf"Bj% 'kkUruo iujokH;Hkk"kr AA ‰AA

श्री वैशम्पायन ने कहा–

सब तरह से सुनकर और यह समझते हुए कि अभी तक ऐसा कोई धर्म नहीं कहा गया है जो सकल पुरुषार्थ का साधक हो और अल्प प्रयास से ही सिद्ध होने वाला हो तथा महान फलदायक हो शांतनु के पुत्र भीष्म पितामह से युधिष्ठिर ने पूछा।

;f/kf"Bj mokp ---

fded nor ykd fd okl;d ijk;.ke A

Lrour% d depUr% çklu;ekuok% 'kHke AA ŠAA

युधिष्ठर बोले–

समस्त विद्याओं के स्थान प्रकाश के हेतु स्वरूप लोक में एक ही देव कौन है जिसके विषय में कहा है कि जिस की आज्ञा से सब प्राणी प्रवृत्त होते हैं तथा एक ही परायण कौन है जिसका साक्षात्कार कर लेने पर सब संशय नष्ट हो जाते हैं तथा संपूर्ण कर्म क्षीण हो जाते हैं

जिसके ज्ञान मात्र से ही आनंद स्वरूप मोक्ष प्राप्त होता है जिसका जानने वाला किसी से भय नहीं करता जिसमें प्रवेश करने वाले का फिर जन्म नहीं होता और कौन से देव की स्तुति गुण कीर्तन करने से तथा किस देव का नाना प्रकार अर्चन और आंतरिक पूजा करने से मनुष्य कल्याण की प्राप्ति कर सकते हैं।

dks /keZ) lokZ/kek.kka Hkor% ijeks er% A
fda tiUeP;rs tUrqtZUela lkjcU/kukr~ AA ‹AA

आप सब धर्मों समस्त धर्मों में पूर्वोक्त लक्षणों से युक्त किस धर्म को परम श्रेष्ठ मानते हैं तथा किस जपने का उच्च उपांशु और मानस जप करने से जीव जन्म संसार बंधन से मुक्त हो जाता है।

Hkh"e mokp --- txRçHkqa nsonsoeuUra iq#"kksÙkee~ A
Lrqou~ ukelgL=.k iq#"kL lrrksfRFkr% AA fåAA

भीष्म जी ने उत्तर दिया थावर जंगम रूप जो संसार है उसके प्रभु स्वामी जो देश काल और वस्तु से परे हैं उस पुरुषोत्तम का सहस्त्रनाम के द्वारा निरंतर तत्पर रहकर गुण संकीर्तन करने से पुरुष सब दुखों से पार हो जाता है

rses pkpZ;fUuR;a Hkä~;k iq#"ke0;;e~ A
/;k;u~ Lrqou~ ueL;a'p ;tekuLrses p AA ffAA

अविनाशी विनाश क्रिया रहित पुरुष का नृत्य भजन और भक्ति से युक्त होकर पूजन करने से जीव सब दुखों से छूट जाता है

fVIi.kh

vukfnfu/ku fo".kq lo ykdegs'oje A
ykdk/;{k Lrofu~uR;a lo nq)[kkfrxks Hkosr~ AA f„AA

अनादि निधन अर्थात होना जन्म लेना बढ़ना बदलना सीन होना और नष्ट होना इन 6 भाग विकारों से रहित विष्णु जो ब्रहमा आदि के भी स्वामी होने से सर्व लोक महेश्वर और सारे दृश्य वर्ग को अपने स्वाभाविक ज्ञान से साक्षात देखने के कारण लोक अध्यक्ष हैं उस देवकी निरंतर स्तुति करने से मनुष्य सब दुखों के पार हो जाता है

czã.;a lo/keZKa ykdkuka dhfrZo/kue~ A
ykdukFka egn~Hkwra loHkwrHkoksn~Hkoe~ AA f…AA

जो ब्रह्मण्य अर्थात जगत की रचना करने वाले ब्रह्मा के तथा ब्राह्मण तप और श्रुति के हितकारी हैं सब धर्मों को जानते हैं। और प्राणियों के यश को उनमें अपनी शक्ति से प्रविष्ट होकर बढ़ाते हैं जो लोकनाथ अर्थात लोगों से प्रार्थना अथवा शासित करने वाले तथा उन पर सत्ता चलाने वाले हैं जो अपने समस्त उत्कर्ष से वर्तमान होने के कारण महद अर्थात ब्रह्म यानी परमार्थ सत्य हैं और जिनकी सन्निधि मात्र से समस्त भूतों का उत्पत्ति स्थान संसार उत्पन्न होता है इसलिए जो समस्त भूतों के उद्भव स्थान हैं उन परमेश्वर का स्तवन करने से मनुष्य सब दुखों से छूट जाता है।

,"k es lo/kek.kka /kekZ·f/kdrek er% A
;nHkDR;k i.Mjhdk{ka Lro\jpsZUuj% lnk AA f†AA

संपूर्ण विधि रूप धर्मों में मैं आगे बतलाए जाने वाले किसी धर्म को सबसे बड़ा मानता हूं कि मनुष्य श्री पुंडरीकाक्ष का अर्थात अपने हृदय कमल में विराजमान भगवान वासुदेव का भक्ति पूर्वक तत्परता सहित गुण संकीर्तन रूप स्तुतियों से सदा अर्चन करें

ije ;k egÙkt) ije ;k egÙki% A
ije ;k egncã ije ;) ijk;.ke AA f‡AA

वह जो महान तेजयुक्त है, वह जो महान, आदेशक सत्ता है, जो महत् पर ब्रह्म है और जो दयालु और परंसत्तावान है।

ifo=k.kk ifo= ;k e³xykuk p e³xye A
nor norkuk p Hkrkuk ;k·0;;% firk AA f^AA

वह तो पवित्रों में पवित्र, आदर्शो में आदर्श, देवताओं के देवता वह जो सम्पूर्ण भूतों में हमारा पालक है।

;r) lokf.k Hkrkfu HkoUR;kfn;qxkxe A
;fLe'p çy; ;kfUr iujo ;qx{k; AA f‰AA

वह जिसने युग के आरंभ में सभी की उत्पत्ति की और जो प्रलय को लाता है और फिर पुनः युग की रचना करता है।

rL; ykdç/kkuL; txUukFkL; Hkir A
fo".kkukelgl e 'k.k ikiHk;kige AA fŠAA

fVIi.kh

उस लोक (जगत्) के प्रधान भूपति जगन्नाथ विष्णु के एक हजार (सहस्र) नामों को सुनने से पाप और भय सब दूर हो जाते हैं।

;kfu ukekfu xk.kkfu fo[;krkfu egkReu% A

_f"kfHk% ifjxhrkfu rkfu o{;kfe Hkr;s AA ƒ‹AA

उस ब्रह्म के पवित्र नामों को मैं उनके गुणों के साथ बताऊँगा। जिनका उच्चारण मुनि लोग करते थे।

_f"kukEuk lglL; onO;klk egkefu% AA

NUnk·u"Vi rFkk nok Hkxoku nodh lr% AA „åAA

विष्णु के हजार (सहस्र) नामों को वेदव्यास जी ने बाताया है। अनुष्टुप छन्द है। देवकी पुत्र भगवान कृष्ण देवता है।

verk'knHkok cht 'kfänofduUnu) A

f=lkek ân; rL; 'kkUR;Fk fofu;kT;r AA „ƒAA

वह देवकीनन्दन ही बीज रूप है। उनके नाम में ही शक्ति है। हृदय तीन सामा से युक्त है। शांति से ही इसका प्रयोमन है।

fo".k ft".k egkfo".k çHkfo".k eg'oje AA

vud :i nR;kUr uekfe i#"kkÙke AA „„ AA

मैं विष्णु को नमस्कार करता हुँ जो विजेता है, पर ब्रह्म है, देवों के देव है, तथा शत्रु विनाशक है और पुरूषों में जो उत्तम हैं।

ikBxr iz'u& 12-1

1. विष्णोः स्मरणमात्रेण कस्मात् विमुच्यते ?
2. कः पवित्राणां पवित्रं मङ्गलानां मङ्गलम् च ?
3. अस्मिन् स्तोत्रे विष्णो कति नामानि वर्णितानि ?
4. कः लोकप्रधानः ?
5. विष्णोः हृद्यः कीदृशः ?

vkius D;k lh[kk\

- विष्णुसहस्रनामस्तोत्र के श्लोकों का उच्चारण करना।
- विष्णुसहस्रनामस्तोत्र का महत्त्व।
- भगवान विष्णु की विभिन्न विशेषताएं।

ikBkar iz'u

1. विष्णुसहस्रनामस्तोत्र पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
2. भगवान बिष्णु की कुछ विशेषताएं लिखिए।

mÙkjekyk

1. जन्मसंसारबन्धनात्
2. विष्णुः
3. सहस्राणि
4. विष्णुः
5. त्रिसामा